Chikan Embroidery

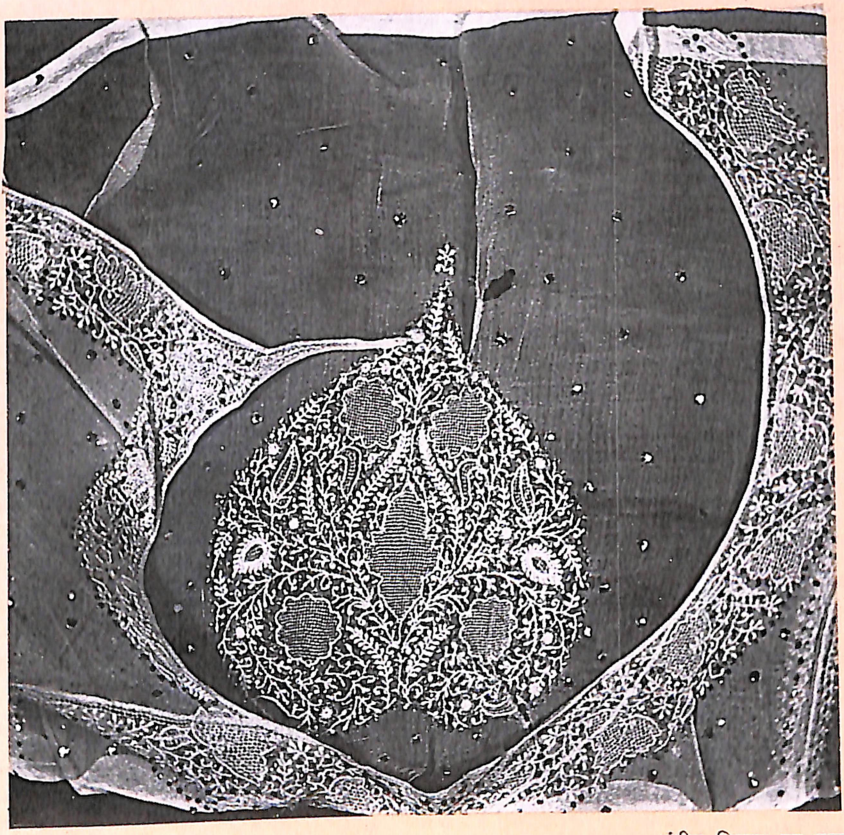

रंगीन चिकन का काम

चिकन कशीदाकारी

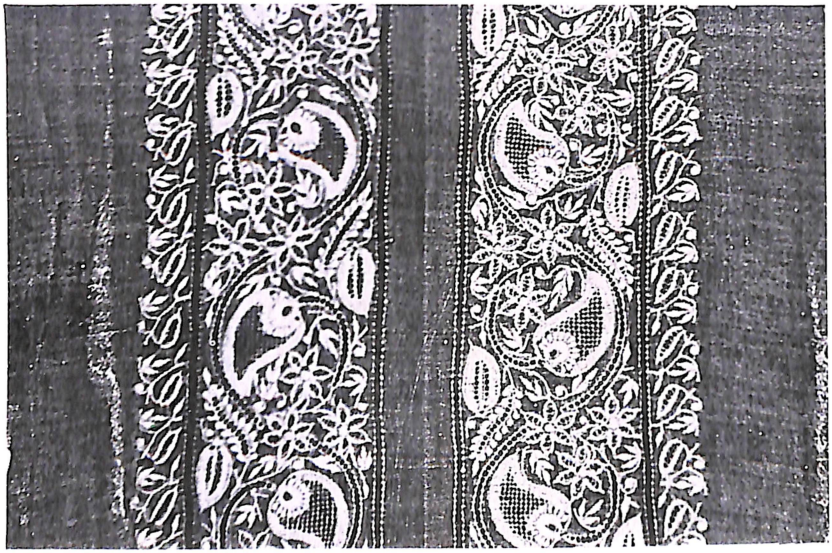

चिकन की कशीदाकारी

Chikan Embroidery

Lucknow is famous for the elegance of its arts and crafts, of which CHIKAN embroidery is a fine example. The special feature of Chikan art is that it is devoid of any showiness or gaudiness. It is a specimen of pure art in all its exquisite beauty. Nowhere else can you get such high class embroidery at such low costs. The splendour of Chikan art lies in spreading pure white moonlight-like designs of flowers, buds etc on cloth with stitches of white thread giving an exotic look to the clothes. During the Nawabi era the designs of jasmine flowers embroidered on Mulmul kurtas were so beautiful that they gave the impression of fresh, jasmine garlands around the necks of the wearers.

In Chikan work, they have to use 36 different types of stitches with names like "Muri", "Bakhiya", "Jaali", Tepchi", "Ghoom kataav", "Hathkati phanda", "Pada", "Ghaas", "Paththi", "Laung", "Pankhudi" and "Bijlikangan" besides the three most important ones known as "Tepchi", "Murri" and "Jaali Chikan".

Chikan designs are initially engraved on wooden blocks and the workers print them on cloth with light dyes. This part of the work is known as *"Boota likhan"*, and the "Gali Parchha" area of Chowk in Lucknow is famous for this work. In earlier times, hunting designs and designs of animals, birds etc were popular, but now the preference is for designs of flowers, buds etc. "Fish" has been aspecial emblem of Awadh (U.P) and therefore, "fishes" have been a favourite motif of chikan artistes. During the Nawabi era, Chikan work was done on materials like "Mulmul adhdhi" from the East, Glasgow Mull., Tenjeb,etc and "*Angrakhas*", "*Duppattas*", "*Kurtas*" for men and women, and coats, caps and hankies used to be made of these fine materials. Nowadays Kurtas, saris, maxis, middies, scarves, napkins, caps, hankies, teacosies, and even bedspreads are being made out of materials like silks, georgettes, cambric, nylons, laawns, rubiya, full-voiles, and organdies. The most beautiful chikan work is done on "Addhi".

Chikan kurtas of Lucknow are made with either front or side openings and both are popular. *Angarakhha* type of Lucknow kurtas have no buttons, but are tied on the side with dainty little tassel-like tapes, "Pundi" and "Tasme".

"*Chikan*" is the Indianised version of the original *Persian word "Chakin"* meaning the art of creating flowers and buds through embroidery. Empress Noorjahan who came from Iran was the pioneer in bringing some of the exotic arts from her country into India. She employed some skilled women in the female apartments of her palace and encouraged them to copy the artistic designs from the palace-walls on to fine Mulmul or Tanjeb clothes through very delicate embroidery with fine thread. When later on, a slave (bondmaid) of the Empress Bismillah left Delhi, came to Lucknow and settled down here, she brought this handicraft with her. *Khadra* across the river Gomti is considered the birthplace of Chikkan because the palace of the royal women known as *"Husna bagh"* or *"Daulat Sarae Sultani"* was located in this area. Under the patronage of the queens and Begums, the Chikkan art reached such high standards that *"Lucknawi chikkan"* became famous even in distant continents.

In Awadh (U.P) one and a half lakhs of women are engaged in this work. 96 percent of chikan artists are women, and the industry brings an annual income of 4to 5 crores of rupees. The maximum demand is from Pakistan, Afghanistan, Egypt, Holland, France, Britain, Italy, Spain, Russia, Canada, U.S.A. and the South East Asian countries.

Translated into English by : Susheela Misra.

चिकन कशीदाकारी

कला और शिल्प क्षेत्र में लखनऊ अति की नफासत का अपना एक अलग रंग रखता है, चिकन जिसका उदाहरण है। चिकन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें किसी आडम्बर या तड़क–भड़क की नुमाइश नहीं है। यह खालिस हुनर की करामात है। सारी दुनिया में इतनी कम लागत से इतने ऊँचे दर्जे की दूसरी कोई कशीदाकारी नहीं है। कच्चे सूत के टाँकों से लिबास पर चाँदनी के से खुशनुमा फूल बूटों को बिखेर कर अनोखी शान पैदा करना ही चिकन का काम है। नवाबी जमाने में मलमल के कुर्ते पर जूही के हार इस खूबसूरती से बनाये जाते थे कि देखने वाले समझते थे कि पहनने वाला गले में फूलों का ताजा गजरा डाले हुए है।

चिकनकारी में ३६ तरह के टाँकों का इस्तेमाल होता है, जिनमें मुर्री, बखिया, जाली, टेपची, घूम कटाव व हथकटी फन्दा, पड़ा, घास, पत्ती, लौंग, पँखुड़ी और बिजली कंगन प्रमुख हैं तेपची, मुर्री और जाली चिकन के तीन प्रमुख टाँके होते हैं।

चिकन के लिए नमूने पहले लकड़ी के छापे पर खोद कर बनाये जाते हैं और छीपी लोग कच्चे रंगों से ये बेल बूटे कपड़ों पर छाप देते हैं। इस काम को ''बूटा लिखन'' कहा जाता है और इसके लिए चौक, लखनऊ की ''गली पारचा'' प्रसिद्ध है। पहले शिकारगाह और पशु–पक्षी के नमूने भी प्रचलन में रहे हैं लेकिन अब फूल–बूटाकारी होती है ''मछली'' अवध की परम्परागत प्रतीक है इसलिए ''मछली'' यहाँ कारीगरों का विशेष प्रिय विषय रहा है।

नवाबी ज़माने में पूरब की मलमल अद्धी, गिलास की नैनसुख (ग्लासगो का बना महीन कपड़ा) तनजेब आबे खां वगैरा पर चिकन का काम बनता था। इन कपड़ों से ही अंगरखे, दुपट्टे, मदनि और जनानें कुरते, रुमाल, चोंगे और टोपियाँ बनती थीं। आजकल सिल्क जार्जेट, कैम्ब्रिक, नायलोन, लोन, रूबिया, फुल वायल, रोमो वायल और आरगडी, सब पर चिकन का काम होता है। जिनसे कुरते, साड़ियाँ, मैक्सी, मिडी, हैंकी, स्कार्फ, नैपकिन, टोपियाँ, पलंगपोश, टिकोजी आदि बनती हैं। सबसे प्यारा चिकन अद्धी पर तैयार होता है। लखनऊ में चिकन के कुरते सीधे गले के ताबोजदार भी कढ़ते हैं और गोल ताँकदार भी, जिनमें बगली सीना खुलता है। अंगरखा तर्ज के ये कुरते घुण्डी, तस्मे से बन्द किये जाते हैं और प्राय: इनमें काज़ बटन नहीं लगाये जाते हैं।

फारसी का एक शब्द ''चकिन'' जिसका मतलब है कशीदाकारी व बेल–बूटे उभारना। यही शब्द ''चिकन'' हिन्दुस्तान में प्रयत्न लाघव से ''चिकन'' कहा जाने लगा। साम्राज्ञी नूरजहां ईरानी नस्ल की शिया बेगम थी जिसने अपने संस्कारों की स्थापना हिन्दुस्तान में पहले पहल की थी। महल के दरो–दीवार पर की गई नक्श–निगारी को मलमल या तनजेब के कपड़ों में पतले सूत की नाजुक कढ़ाई में उतार लेने की इस कला को नूरजहाँ के समय में विशेष प्रोत्साहन मिला और इस काम के लिए हरम में कुछ हुनरमन्द औरतें मुलाजिम होने लगीं।

मलकए आलम नूरजहाँ की एक बांदी विस्मिल्लाह जब दिल्ली से लखनऊ आकर आबाद हुई तो वो अपने साथ इस हस्तकला को यहाँ लाई। लखनऊ में गोमती के उस पार खदरा का इलाका चिकन शिल्प का जन्म स्थान माना जाता है। इसी क्षेत्र में ''शाह'' अवध का रनिवास था, जो हुस्नबाग कहलाता था या फिर ''दौलत सरा–ए–सुल्तानी'' के नाम से जाना जाता था। मलिकाओं और बेगमों की इस जनानी ड्यौढ़ी में कनोजों और खवासों के हाथों इस हुनर की परवरिश हुई और फिर लखनवी चिकन का काम दुनिया में दूर–दूर तक मशहूर हो गया।

लखनऊ में आज भी चिकन का काम ९६ प्रतिशत महिलाओं द्वारा ही होता है। जिसमें अवध इलाके की डेढ़ लाख औरतें लगी हुई हैं।

लखनऊ चिकन का निर्यात ४–५ करोड़ रुपया सालाना की दर से होता है। चिकन के प्रमुख खरीददार पाकिस्तान, अफगानिस्तान, मिस्र, हालैण्ड, फ्रान्स, ब्रिटेन, इटली, स्पेन, रूस, कनाड़ा, अमेरिका तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देश हैं।

योगेश प्रवीन

छाया चित्र : **योगेश प्रवीन**

निदेशक संस्कृति विभाग उ.प्र. द्वारा प्रकाशित एवम् **शिवम आर्ट्स** 211, निशातगंज, लखनऊ दूरभाष –386389 द्वारा मुद्रित।